SAMPLE REPORT

Birth details hidden in this sample

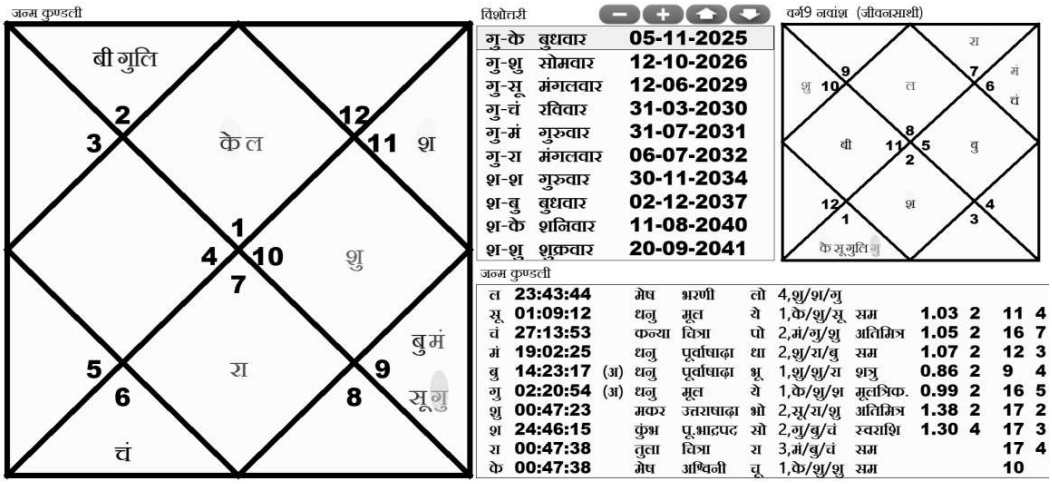

अंक गणना और फलादेश

विषय	गणना	प्राप्त अंक	प्रतिनिधि ग्रह
मूलांक	17 ⟶ 1+7	**8**	शनि
भाग्यांक	1+7+1+2+1+9+9+5 = 35 ⟶ 3+5	**8**	शनि
नामांक	(NAME) = 51 = 5+1	**6**	शुक्र

नामांक की गणना चाल्डियन पद्धति से की गई है:

आपके मूलांक 8 का विश्लेषण

जातक का जन्म 17 तारीख को हुआ है, इसलिए मूलांक 8 है। मूलांक 8 शनि का अंक है। यह अंक व्यक्ति के मूल स्वभाव, निर्णय पद्धति और जीवन को देखने के दृष्टिकोण में गंभीरता, धैर्य, उत्तरदायित्व और परिणाम के प्रति व्यावहारिकता उत्पन्न करता है। ऐसा व्यक्ति सामान्यतः किसी बात पर तुरंत विश्वास नहीं करता। वह लोगों और परिस्थितियों को समय देकर परखता है तथा अपने अनुभवों से सीखता है।

मूलांक 8 वाले जातक के जीवन में सफलता प्रायः बहुत तेजी से नहीं आती, लेकिन जब आती है तो अधिक स्थायी होती है। जीवन में जिम्मेदारियाँ अपेक्षाकृत जल्दी मिल सकती हैं। कई बार व्यक्ति को यह अनुभव होता है कि उसे सामान्य परिणाम प्राप्त करने के लिए भी दूसरों की तुलना में अधिक संघर्ष करना पड़ रहा है। इसी संघर्ष से उसमें प्रशासन, व्यवस्था, अनुशासन और कठिन परिस्थितियों को संभालने की विशेष क्षमता विकसित होती है।

जन्म तारिक 17 का विशेष ग्रह-सूत्र

17 में 1 सूर्य और 7 केतु का प्रतिनिधित्व करता है तथा इन दोनों का योग 8 शनि बनता है। जातक की कुंडली में भी यह ग्रह-सूत्र अत्यंत स्पष्ट दिखाई देता है:

- सूर्य नवम भाव में है।
- केतु मेष लग्न में है।
- इन दोनों से बनने वाला मूलांक 8 का स्वामी शनि एकादश भाव में स्वराशि कुम्भ में है।

इसलिए 17/8 केवल अंक-ज्योतिष में ही नहीं, बल्कि जन्मकुंडली में भी पूरी शक्ति के साथ सक्रिय है। सूर्य जातक को सम्मान, नेतृत्व और अपनी पहचान स्थापित करने की इच्छा देता है। लग्न का केतु भीतर से आत्मविश्लेषण, अलग सोच और कभी-कभी स्वयं से असंतोष उत्पन्न करता है। इन दोनों का अंतिम परिणाम शनि की तरह परिश्रम, अनुभव और विलम्ब के बाद स्थायी उपलब्धि के रूप में सामने आता है।

मूलांक स्वामी ग्रह शनि का कुंडली में मिलान

मेष लग्न में शनि दशम और एकादश भाव का स्वामी होकर एकादश भाव में अपनी कुम्भ राशि में स्थित है। यह मूलांक 8 के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण पुष्टि है। स्वराशि का शनि दीर्घकालीन आय, बड़े संगठनों से जुड़ाव, प्रभावशाली व्यक्तियों का नेटवर्क, तकनीकी या व्यवस्थापकीय क्षमता तथा धीरे-धीरे बढ़ने वाली आर्थिक स्थिति देता है।

जातक अपने जीवन में ऐसे लोगों से लाभ प्राप्त कर सकता है जो उम्र, पद, अनुभव अथवा सामाजिक स्थिति में उससे बड़े हों। बड़ी संस्था, सरकारी व्यवस्था, औद्योगिक क्षेत्र, तकनीकी कार्य, प्रशासन, प्रबंधन, निर्माण, कानून, सामाजिक संगठन अथवा बड़े नेटवर्क से जुड़े कार्य लाभकारी हो सकते हैं। आकस्मिक सफलता की अपेक्षा योजनाबद्ध और निरंतर कार्य से अधिक उपलब्धि मिलेगी।

शनि की तीसरी दृष्टि मेष लग्न और लग्नस्थ केतु पर पड़ रही है। इसके कारण जातक बाहर से गंभीर, नियंत्रित और जिम्मेदार दिखाई देगा, लेकिन भीतर कभी-कभी स्वयं को लेकर असमंजस अनुभव कर सकता है। व्यक्ति अपनी योग्यता को दूसरों के सामने तुरंत प्रकट नहीं करता और कई बार आवश्यकता से अधिक आत्ममंथन करता है। यह योग जातक को भीड़ का अनुसरण करने के बजाय अपना स्वतंत्र मार्ग बनाने के लिए प्रेरित करता है।

आपके भाग्यांक 8 का विश्लेषण

जातक का भाग्यांक भी 8 है। मूलांक और भाग्यांक दोनों का समान होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। इसका अर्थ है कि व्यक्ति का आंतरिक स्वभाव और बाहरी जीवन-पथ एक ही ग्रह—शनि—से संचालित हो रहा है। जातक जिस प्रकार सोचता है, जीवन भी उसे उसी प्रकार की परिस्थितियों से प्रशिक्षित करता है।

यह दोहरा 8 जातक को साधारण जीवन से संतुष्ट नहीं रहने देता। उसके जीवन में उत्तरदायित्व, संघर्ष, सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिरता और कोई बड़ा कार्य खड़ा करने की इच्छा प्रमुख रहेगी। परंतु इसके साथ विलम्ब, मानसिक दबाव, काम का बोझ और कभी-कभी अकेले संघर्ष करने की स्थिति भी बन सकती है।

भाग्यांक 8 वाले जातक के जीवन में प्रारम्भिक अस्थिरता के बाद क्रमशः स्थिरता बढ़ती है। इसकी सफलता उम्र और अनुभव के साथ बढ़ने वाली होती है। जितना अधिक जातक व्यवस्था, समयबद्धता और नैतिक अनुशासन अपनाएगा, उतना ही अधिक शनि उसका सहयोग करेगा। शॉर्टकट, संदिग्ध साझेदारी अथवा बिना जाँच के आर्थिक जोखिम उसके लिए हानिकारक हो सकते हैं।

35 संख्या का ग्रह-सूत्र

भाग्यांक का यौगिक अंक 35 है। इसमें 3 बृहस्पति और 5 बुध का प्रतिनिधित्व करता है तथा इनका योग 8 शनि बनता है। जन्मकुंडली में बृहस्पति और बुध दोनों नवम भाव में एक साथ स्थित हैं, जबकि अंतिम अंक 8 का स्वामी शनि एकादश भाव में स्वराशि का है।

यह असाधारण ग्रह-साम्य बताता है कि जातक का भाग्य ज्ञान, शिक्षा, सलाह, संचार, गणना, व्यापारिक बुद्धि, यात्राओं और बौद्धिक योग्यता के माध्यम से खुल सकता है। नवम भाव में अपनी धनु राशि का बृहस्पति सिद्धांत, ज्ञान और मार्गदर्शन देता है। बुध तर्क, संवाद, लेखन, व्यापार और विश्लेषण देता है। इन दोनों का परिणाम एकादशस्थ शनि के माध्यम से आय, नेटवर्क और दीर्घकालीन उपलब्धि में परिवर्तित हो सकता है।

जातक केवल शारीरिक परिश्रम से नहीं, बल्कि ज्ञान और बुद्धि के व्यवस्थित उपयोग से अधिक आगे बढ़ेगा। परामर्श, प्रशिक्षण, शिक्षा, कानून, प्रशासन, वित्तीय योजना, लेखन, मीडिया, मार्केटिंग, तकनीकी विश्लेषण अथवा ऐसे कार्य जिनमें ज्ञान को व्यावहारिक परिणाम में बदलना हो, लाभकारी रहेंगे।

आपका मूलांक और भाग्यांक दोनों 8 है और दोनों का स्वामी शनि ही है जो की कुंडली के लाभ भाव में अपनी राशि में बैठा है इसलिए आपका मूलांक और भाग्यांक दोनों आपके जीवन में एक ही दिशा में बल लगायेंगे जो की एक श्रेष्ठ स्थिति है।

आपके नामांक 6 का विश्लेषण

"(NAME)" का नामांक 5+1= 6 आता है। अंक 6 का स्वामी शुक्र है। शुक्र व्यक्ति को आकर्षण, व्यवहार-कुशलता, सामाजिक स्वीकार्यता, संबंध बनाने की क्षमता, सुख-सुविधा, सौंदर्य-बोध और आर्थिक संसाधनों को उपयोगी बनाने की योग्यता देता है। नामांक की गणना चाल्डियन पद्धति से की गई है

मूलांक और भाग्यांक दोनों 8 होने से जातक का स्वभाव गंभीर और कर्मप्रधान है, जबकि नामांक 6 उसके व्यक्तित्व में सौम्यता, सामाजिकता और आकर्षण जोड़ता है। लोग जातक को केवल कठोर या गंभीर व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि समझदार, व्यवस्थित और व्यवहार-कुशल व्यक्ति के रूप में भी देख सकते हैं। नामांक 6 दोहरे 8 की कठोरता को संतुलित करता है।

नामांक का कुंडली से मिलान

मेष लग्न में शुक्र द्वितीय और सप्तम भाव का स्वामी होकर दशम भाव में मकर राशि में स्थित है। यह नामांक 6 की अत्यंत स्पष्ट पुष्टि है। दशम भाव का शुक्र बताता है कि जातक का नाम, सार्वजनिक छवि, व्यवसाय, ग्राहक-संबंध, साझेदारी और सामाजिक व्यवहार उसके करियर की प्रगति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

शुक्र मकर राशि में है, जिसका स्वामी शनि है। इसका अर्थ है कि जातक का नामांक 6 अंततः मूलांक और भाग्यांक 8 के अधीन कार्य कर रहा है। शुक्र लोकप्रियता और अवसर देगा, लेकिन स्थायी उपलब्धि शनि के अनुशासन, समयबद्धता और मेहनत से ही मिलेगी। जातक के लिए केवल आकर्षक प्रस्तुति पर्याप्त नहीं होगी; उसे विश्वसनीयता और परिणाम भी सिद्ध करने होंगे।

द्वितीयेश शुक्र के दशम भाव में होने से वाणी, परिवार, वित्तीय ज्ञान अथवा ग्राहक-संबंधों को व्यवसाय में उपयोग करने की क्षमता मिलती है। सप्तमेश शुक्र का दशम भाव में होना बताता है कि विवाह, जीवनसाथी, व्यावसायिक साझेदारी अथवा जनता से सीधा संबंध जातक के करियर को प्रभावित करेगा। जीवनसाथी स्वयं कर्मशील हो सकता है अथवा उसके कारण जातक के व्यवसाय और सामाजिक स्थिति में परिवर्तन आ सकता है। कुलमिलाकर आपका नामांक शुक्र ग्रह पर है जो की कुंडली के अच्छे भाव में बैठा है और शुक्र धन व साझेदारी भाव का स्वामी है इसलिए नामांक भी अच्छा सन्देश दे रहा है।

51 संख्या का ग्रह-सूत्र

नामांक का यौगिक अंक 51 है। इसमें 5 बुध और 1 सूर्य का प्रतिनिधित्व करता है तथा इनका योग 6 शुक्र बनता है। कुंडली में बुध और सूर्य दोनों नवम भाव में एक साथ स्थित हैं और परिणाम देने वाला शुक्र दशम भाव में बैठा है।

इसका सीधा संकेत है कि जातक अपनी बुद्धि, ज्ञान, संचार, नेतृत्व, विचारधारा और निर्णय क्षमता को पेशेवर पहचान में परिवर्तित कर सकता है। शिक्षण, सलाह, मार्गदर्शन, प्रशासन, लेखन, प्रकाशन, डिजिटल मीडिया, व्यापारिक वार्ता अथवा सार्वजनिक संपर्क से जुड़े कार्यों में नाम और लाभ दोनों मिल सकते हैं। नामांक जातक की ज्ञान-क्षमता को करियर और प्रतिष्ठा से जोड़ रहा है।

नाम के तीनों भागों का प्रभाव

"(First name)" का अंक 19/1 है, जिसका स्वामी सूर्य है। यह व्यक्तिगत पहचान, नेतृत्व, सम्मान और स्वतंत्र निर्णय की इच्छा बढ़ाता है। कुंडली में सूर्य पंचमेश होकर नवम भाव में स्थित है। इसलिए जातक अपने ज्ञान, बुद्धि, शिक्षा, सलाह अथवा नेतृत्व क्षमता से प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। वह चाहता है कि उसके विचारों को मान्यता मिले और उसका कार्य केवल आय ही नहीं, बल्कि सम्मान भी प्रदान करे।

"(Middle name)" का अंक 17/8 है। यह जातक के मूलांक और भाग्यांक दोनों को पुनः सक्रिय करता है। इस कारण सामाजिक और पारिवारिक पहचान के स्तर पर शनि का प्रभाव अधिक रहेगा। जातक को अपने परिवार अथवा सामाजिक परिवेश में जिम्मेदार व्यक्ति माना जा सकता है। प्रतिष्ठा धीरे-धीरे बनेगी, परंतु बनने के बाद स्थायी रह सकती है।

"(Last name)" का अंक 15/6 है, जिसका स्वामी शुक्र है। यह सामाजिक व्यवहार, आकर्षण, संबंध, आर्थिक समझ और भौतिक उन्नति का सूचक है। कुंडली का शुक्र दशम भाव में होने के कारण यह भाग करियर, सार्वजनिक पहचान और व्यवसाय में विशेष सहायता करता है।

अंक और कुंडली से निर्मित व्यक्तित्व

दोहरे 8 के कारण जातक मूलतः गंभीर, सहनशील, परिणाम-केंद्रित और उत्तरदायी है। वह किसी कार्य को सतही रूप में नहीं करता। किसी निर्णय पर पहुँचने से पहले उसके लाभ-हानि पर पर्याप्त विचार करता है। लेकिन कन्या राशि का चन्द्रमा छठे भाव में होने से यही विश्लेषण कभी-कभी अत्यधिक चिंता, छोटी कमियों पर ध्यान और मानसिक दबाव में बदल सकता है।

लग्नस्थ केतु जातक को अंदर से अलग और स्वतंत्र बनाता है। उसे कई बार ऐसा अनुभव हो सकता है कि लोग उसकी वास्तविक सोच को पूरी तरह नहीं समझते। शनि की लग्न पर दृष्टि इस गंभीरता को और बढ़ाती है। जातक अपनी समस्याएँ दूसरों के सामने कम प्रकट करेगा और लंबे समय तक स्वयं समाधान खोजने का प्रयास करेगा।

नवम भाव में सूर्य, बृहस्पति, बुध और मंगल की उपस्थिति जातक को सिद्धांतवादी, ज्ञानप्रिय, तर्कशील और अपने विचारों के प्रति दृढ़ बनाती है। वह केवल परंपरा का पालन करने के बजाय उसके पीछे का कारण जानना चाहेगा। लेकिन सूर्य–मंगल की ऊर्जा के कारण वैचारिक मतभेद में भाषा कठोर हो सकती है। गुरु, पिता, वरिष्ठ अधिकारी अथवा किसी धार्मिक-सामाजिक विचार को लेकर समय-समय पर मतभेद संभव हैं।

जन्म नक्षत्र का फलादेश

जातक का चन्द्रमा कन्या राशि में चित्रा नक्षत्र के द्वितीय चरण में स्थित है। मेष लग्न की कुंडली में यह स्थिति छठे भाव में बनती है। चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल है और इस कुंडली में मंगल लग्नेश तथा अष्टमेश होकर नवम भाव में सूर्य, बृहस्पति और

बुध के साथ स्थित है। इसलिए जन्म नक्षत्र का फल केवल चन्द्रमा तक सीमित नहीं रहेगा; उसका परिणाम नवम भाव—भाग्य, उच्च शिक्षा, गुरु, पिता, सिद्धांत, धर्म और दूर यात्राओं—से भी गहराई से जुड़ा होगा।

चित्रा नक्षत्र की मूल प्रकृति

चित्रा का अर्थ है—सुंदर, चमकदार, विशिष्ट और आकर्षक रचना। इसका प्रतीक चमकता हुआ रत्न है और इसके अधिष्ठाता देवता त्वष्टा अथवा विश्वकर्मा हैं, जिन्हें दिव्य शिल्पकार माना जाता है। इसलिए इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले व्यक्ति में किसी वस्तु, व्यवस्था, विचार या जीवन-स्थिति को नया स्वरूप देने की स्वाभाविक क्षमता होती है।

जातक चीजों को जैसी वे दिखाई देती हैं, केवल वैसा स्वीकार नहीं करता। उसकी दृष्टि उन कमियों पर जाती है जिन्हें सामान्य व्यक्ति अनदेखा कर देता है। वह किसी कार्य, व्यवसाय, व्यवस्था या संबंध को अधिक व्यवस्थित, उपयोगी और प्रभावशाली बनाने का प्रयास करता है। उसकी मूल प्रतिभा केवल निर्माण करने में नहीं, बल्कि बिगड़ी हुई व्यवस्था को सुधारने और पुनर्निर्माण करने में है।

चित्रा राक्षस गण का नक्षत्र है। इसका अर्थ नकारात्मक या क्रूर स्वभाव नहीं है। राक्षस गण व्यक्ति को स्वतंत्र सोच, तीव्र इच्छाशक्ति और स्थापित मान्यताओं पर प्रश्न उठाने की प्रवृत्ति देता है। ऐसा जातक बिना कारण किसी परंपरा को स्वीकार नहीं करेगा। उसे तर्क, परिणाम और व्यावहारिक प्रमाण चाहिए।

चित्रा के द्वितीय चरण का विशेष प्रभाव

चित्रा का द्वितीय चरण कन्या राशि और कन्या नवांश दोनों में पड़ता है। इसलिए जातक का चन्द्रमा वर्गोत्तम हो जाता है। वर्गोत्तम चन्द्रमा मानसिक शक्ति, स्मरण-क्षमता और अनुभवों के गहरे प्रभाव को बढ़ाता है। किंतु चन्द्रमा छठे भाव में होने के कारण उसकी शक्ति सेवा, संघर्ष, प्रतिस्पर्धा, रोग-प्रबंधन, समस्याओं के समाधान और दैनिक जिम्मेदारियों में प्रकट होगी।

द्वितीय चरण का स्वामी बुध है। इसलिए चित्रा के मंगल की सक्रियता में बुध की गणना, तर्क, सूक्ष्म निरीक्षण और विश्लेषणात्मक क्षमता सम्मिलित हो जाती है। जातक केवल तेजी से काम करने वाला व्यक्ति नहीं होगा; वह किसी विषय की तकनीकी और व्यावहारिक कमियों को पकड़ने वाला व्यक्ति होगा। उसकी कार्यशैली में गुणवत्ता, साफ-सफाई, क्रमबद्धता और विवरण का विशेष महत्त्व रहेगा।

यह स्थिति व्यक्ति को परफेक्शनिस्ट बनाती है। जातक अपने कार्य में छोटी त्रुटि भी आसानी से स्वीकार नहीं करता। सकारात्मक अवस्था में यही गुण उसे विशेषज्ञ बनाता है, लेकिन नकारात्मक अवस्था में वह स्वयं और दूसरों से अत्यधिक अपेक्षा रखने लगता है। इसके कारण मानसिक असंतोष, चिड़चिड़ापन और किसी कार्य को बार-बार सुधारने की आदत बन सकती है।

मानसिक और मनोवैज्ञानिक संरचना

कन्या राशि का चन्द्रमा मन को विश्लेषणात्मक बनाता है, जबकि छठा भाव समस्याओं और संघर्षों का है। इसलिए जातक का मन स्वतः उन विषयों की ओर जाता है जहाँ कोई समस्या, कमी या सुधार की आवश्यकता हो। वह शांत अवस्था में भी भविष्य की समस्याओं का अनुमान लगाने लगता है। इसी कारण उसकी योजना बनाने की क्षमता अच्छी होगी, लेकिन अनावश्यक चिंता भी उत्पन्न हो सकती है।

जातक अपने मन की बात तुरंत व्यक्त नहीं करेगा। वह पहले परिस्थिति का निरीक्षण करेगा, फिर उसका विश्लेषण करेगा और उसके बाद प्रतिक्रिया देगा। लेकिन जब किसी व्यक्ति की लापरवाही अथवा असत्य उसे स्पष्ट दिखाई देता है, तब उसकी